International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(6): 108-108

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(6): 108-108
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 20-09-2017
Accepted: 21-10-2017

Divakar Kumar
Senior Research Scholar, Department of Statistics, University of Warwick, Oxford-Warwick Statistics Program, a joint research program between University of Oxford and University of Warwick, United Kingdom

Correspondence
Divakar Kumar
Senior Research Scholar, Department of Statistics, University of Warwick, Oxford-Warwick Statistics Program, a joint research program between University of Oxford and University of Warwick, United Kingdom

ईशानवन्दनम्

Divakar Kumar

प्रस्तावना

निम्नलिखित संस्कृत पंक्तियाँ शिव को समर्पित है जो उनके भिन्न–भिन्न स्वरुप का वर्णन करती हैं। इनमे मानव शरीर के मुख्य सात चक्रों में शिव की उपस्थिति का भाव समाहित है। मानव शरीर के सात चक्र क्रमशः– मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा, सहस्त्रार में शिव रूपी ऊर्जा का निवास माना गया है। पौराणिक पुस्तकों एवं वेदों में इस शिव स्वरूपी ऊर्जा का सुनयोजित ढंग से प्रवाह का स्त्रोत बीज मन्त्रों क्रमशः – लं, वं, रं, यं , हं , ओऊम एवं ॐ को कहा गया है। ये पंक्तियाँ शिव को लंकार, वंकार, रंकार, यंकार, हंकार, ओऊमकार तथा ओंकार स्वरुप का बोध करते हुए क्रमशः बीज मन्त्रों से सम्बन्ध स्थापित करती हैं। पौराणिक गाथाओं ने शिव को ब्रह्म की संज्ञा देते हुए ब्रह्माण्ड की प्रत्येक नश्वर वस्तुओं में शिव के समन्वय का बखान किया है। ठीक उसी प्रकार ये पंक्तियाँ मनुस्य शरीर एवं उससे सम्बंधित गुणों को शिव की संज्ञा देती हैं जिसके फलस्वरूप शिव को हृदय, चरित्र, प्राण, ध्यान, ज्ञान, श्वास, तुरीय, वंदना, व्यान, एवं सर्व के द्वारा बोधित किया गया है। साथ ही साथ यहाँ शिव को हिरयणयगर्भ के द्वारा ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का मूल कारण भी समझा गया है। यह वंदना शिव को निर्विकार तथा साकार दोनों रूपों में देखती है साथ ही साथ उन्हें अनुयोग एवं महायोग विद्याओँ का स्वामी भी माना गया है।

त्वम् अनन्तम् शिवम् ओंकारेश्वरम् मल्लिकार्जुनम् मम् हृदयम् मसि।
नमो लंकारायम् महाकालेश्वरम् सच्चिदानन्दनम् मम् चरितम् मसि।।

ओउम् शाश्वत् गुरुम् महापरमेश्वरम् शितिकण्ठायानम् मम् प्राणम् मसि।
नमो वंकारायम् त्वम् माहेश्वरम् हिरण्यगर्भायम् मम् ध्यानम् मसि।।

वन्दे उमापतिम् गौरिकामन्दिरम् हे भीमशन्करम् मम् ग्यानम् मसि।
नमो रंकारायम् शशिशेखारायम् व्योमकेशायम् मम् श्वासम् मसि।।

अजम् निर्गुणम् निर्विकारेश्वरम् अम्बिकाराधितम् मम् तुरियम् मसि।
नमो हंकारायम् गौरिकान्तायम् भुजगेन्द्रहारायम् मम् वन्दनम् मसि।।

नमस्ते जटाधरम् अनुयोगेश्वरम् महायोगेश्वरम् मम् व्यानम् मसि।
नमो यंकारायनम् महादेवायम् कालकालायम् मम् सर्वम् मसि।।

References

1. Jha Surkant. Raavan Samhita. Edn 3, Vol. I, Chaukhambha Sanskrit Series, Varanasi, 2016, 209-328.
2. Achyutashtakam. Weblink: http://greenmesg.org/mantras_slokas/sri_krishna-achyutashtakam-acyutam_keshavam.php. Visited on: 25 Nov, 2017.
3. Shivastakam. Weblink: http://greenmesg.org/mantras_slokas/sri_shiva-shivashtakam.php. Visited on: 26 Nov, 2017.
4. 108 Names of Shiva. http://www.dharmavidya.com/108-names-of-shiva-(sanskrit-only).html. Visited on: 26 Nov, 2017.
5. Anuyoga. Weblink: https://en.wikipedia.org/wiki/Anuyoga. Visited on: 28 Nov, 2017.